तख़रीज शुदा

Buddha Pujari (Hindi)

बुड्ढा पुजारी

❁ दुन्या की बदहाली 3 ❁ आग़ाज़े दा'वते इस्लाम 7

❁ ग़ारे हिरा में इबादत 5 ❁ मुसल्मान होते ही नेकी की धूम 8

❁ नाख़ुन काटने के मदनी फूल 21

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُسْتَطْرَف ج١ ص٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

बुड्ढा पुजारी

येह रिसाला (**बुड्ढा पुजारी**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. **98987 32611** • Email : **hind.printing92@gmail.com**

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

बुड्ढा पुजारी[1]

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (24 सफ़ह़ात) **मुकम्मल पढ़ लीजिये** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **दुन्या व आख़िरत के बे शुमार मनाफ़ेअ़ ह़ासिल होंगे ।**

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक मर्तबा बाहर तशरीफ़ लाए तो मैं भी पीछे हो लिया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक बाग़ में दाख़िल हुए और सज्दे में तशरीफ़ ले गए। सज्दे को इतना त़वील कर दिया कि मुझे अन्देशा हुवा कहीं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने रूह़े मुबारका क़ब्ज़ न फ़रमा ली हो। चुनान्चे मैं क़रीब हो कर बग़ौर देखने लगा। जब सरे अक़्दस उठाया तो फ़रमाया : ''ऐ अ़ब्दुर्रह़मान ! क्या हुवा ?'' मैं ने अपना ख़दशा ज़ाहिर कर दिया तो

---

1 : येह बयान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक ''दा'वते इस्लामी'' के आ़लमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** (बाबुल मदीना) में होने वाले यकुम रबीउ़न्नूर शरीफ़ (1430 हि.) के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में फ़रमाया। ज़रूरी तरमीम के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है।

मजलिसे मक्तबतुल मदीना

फ़रमाया : "जिब्रईले अमीन ने मुझ से कहा : "क्या आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह बात ख़ुश नहीं करती कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि जो तुम पर **दुरूदे पाक** पढ़ेगा मैं उस पर **रह़मत** नाज़िल फ़रमाऊंगा और जो तुम पर **सलाम** भेजेगा मैं उस पर **सलामती** उतारूंगा।" (مسندِ امام احمد ج ۱ ص ۴۰۶ حدیث ۱۱۶۶۲ دار الفکر بیروت)

ज़माने वाले सताएं, दुरूदे पाक पढ़ो

जहां के ग़म जो रुलाएं, दुरूदे पाक पढ़ो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अहले अ़रब का दीन यूं तो दीने इब्राहीमी عَلَيْهِ السَّلَام था मगर इस की अस्ल सूरत बिल्कुल बदल दी गई थी। तौह़ीद की जगह शिर्क ने और ख़ुदाए वाह़िद جَلَّ جَلَالُهٗ की इ़बादत की जगह बुत परस्ती ने ले ली थी। उन में कुछ तो बुतों को अपना ख़ुदा समझते थे तो बा'ज़े दरख़्तों को, चांद, सूरज और सितारों को पूजते थे और कुछ कुफ़्फ़ारे ना हन्जार, फ़िरिश्तों को ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की बेटियां क़रार दे कर उन की पूजा पाट में मस्रूफ़ थे। किरदार की पस्ती का आ़लम येह था कि वोह शबो रोज़ शराब ख़ोरी, क़िमार बाज़ी (या'नी जुवा) ज़िनाकारी और क़त्लो ग़ारत गरी में मश्ग़ूल रहते थे। उन की क़सावते क़ल्बी (या'नी दिल की सख़्ती) का इस बात से बख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि लड़कियों को पैदा होते ही ज़िन्दा दरगोर (या'नी ज़िन्दा दफ़्न) कर दिया करते और बसा अवक़ात **इन्सानों को ज़ब्ह़** कर के उस को बुतों पर बतौ़रे चढ़ावा पेश करते। इस वह़शियाना ह़रकत की सूरत कुछ इस त़रह़ होती कि मख़्सूस अवक़ात में भेंट चढ़ाने के लिये किसी **सफ़ेद ऊंट या इन्सान** को लाया जाता, फिर वोह अपने **मुतबर्रक** मक़ाम के गिर्द **भजन** गाते

हुए तीन बार त़वाफ़ करते, इस के बा'द सरदारे क़ौम या **बुढ्ढा पुजारी** बड़ी फ़ुरती के साथ उस भेंट (या'नी इन्सान या ऊंट जो भी हो) पर पहला वार करता और उस का कुछ ख़ून पीता। इस के बा'द ह़ाज़िरीन उस **सफ़ेद ऊंट या इन्सान** पर टूट पड़ते और उस की तिक्का बोटियां कर के उस को कच्चा ही कच्चा खा डालते ! अल ग़रज़ अ़रब में हर त़रफ़ वह़शत व बरबरिय्यत का दौर दौरा था। लड़ाइयों में आदमिय्यों को ज़िन्दा जला देना, औ़रतों का पेट चीर डालना, बच्चों को ज़ब्ह़ करना, उन को नेज़ों पर उछाल देना उन के नज़्दीक मा'यूब न था।

दुन्या की बदह़ाली

येह ह़ालत सिर्फ़ अ़रब के साथ ही मख़्सूस न थी बल्कि तक़रीबन पूरी दुन्या में तारीकी छाई हुई थी। चुनान्चे **अहले फ़ारस** (या'नी ईरानी) अक्सर आग की पूजा करने और अपनी माओं के साथ वत़ी करने में मश्ग़ूल थे। ब कस्रत **तुर्क** शबो रोज़ बस्तियां उजाड़ने और लूटमार करने में मस्रूफ़ थे और बुत परस्ती और लोगों पर ज़ुल्मो जफ़ा उन का **वतीरा** था। हिन्दुस्तान के कसीर अफ़्राद बुतों की पूजापाट और ख़ुद को आग में जला देने के इ़लावा कुछ न जानते थे। बहर कैफ़ हर त़रफ़ कुफ़्र व ज़ुल्मत का घटा टोप अंधेरा छाया हुवा था। काफ़िर इन्सान बदतर अज़ ह़ैवान हो चुका था। चुनान्चे

आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत हो गई

इस आ़लमगीर ज़ुल्मत में नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर, आमिना के पिसर, ह़बीबे दावर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कुल जहां के लिये हादी व रहबर बन कर वाक़िअ़ए

अस्ह़ाबे फ़ील के पचपन (55) दिन के बा'द 12 रबीउ़न्नूर ब मुत़ाबिक़ 20 अप्रैल 571 सि.ई.[1] बरोज़ पीर सुब्ह़े सादिक़ के वक़्त कि अभी बा'ज़ सितारे आस्मान पर टिमटिमा रहे थे, चांद सा चेहरा चमकाते, कस्तूरी की खुश्बू महकाते, ख़तना शुदा, नाफ़ बुरीदा, दोनों शानों के दरमियान मोहरे नुबुव्वत दरख़्शां, सुरमगीं आंखें, पाकीज़ा बदन दोनों हाथ ज़मीन पर रखे हुए, सरे पाक आस्मान की त़रफ़ उठाए हुए दुन्या में तशरीफ़ लाए।

(اَلْمَوَاهِبُ اللَّدُنِّيَّة لِلْقَسْطَلَانِی ج۱ ص۶۶۔۷۵وغیرہ دارالکتب العلمیة بیروت)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रबीउ़ल अव्वल उम्मीदों की दुन्या साथ ले आया
दुआ़ओं की क़बूलिय्यत को हाथों हाथ ले आया

ख़ुदा ने ना ख़ुदाई की ख़ुद इन्सानी सफ़ीने की
कि रह़मत बन के छाई बारहवीं शब इस महीने की

जहां में जश्ने सुब्ह़े ईद का सामान होता था
उधर शैत़ान तन्हा अपनी नाकामी पे रोता था

सदा हातिफ़ ने दी ऐ साकिनाने ख़ित़्त़ए हस्ती !
हुई जाती है फिर आबाद येह उजड़ी हुई बस्ती

मुबारक बाद है उन के लिये जो ज़ुल्म सहते हैं
कहीं जिन को अमां मिलती नहीं बरबाद रहते हैं

मुबारक बाद बेवाओं की ह़सरत ज़ा निगाहों को
असर बख़्शा गया नालों को फ़रियादों को आहों को

ज़ई़फ़ों बे कसों आफ़त नसीबों को मुबारक हो
यतीमों को ग़ुलामों को ग़रीबों को मुबारक हो

मुबारक ठोकरें खा खा के पैहम गिरने वालों को
मुबारक दश्ते ग़ुरबत में भटकते फिरने वालों को

मुबारक हो कि दौरे राह़तो आराम आ पहुंचा
नजाते दाइमी की शक्ल में इस्लाम आ पहुंचा

मुबारक हो कि ख़त्मुल मुरसलीं तशरीफ़ ले आए
जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीं तशरीफ़ ले आए

बसद अन्दाज़े यक्ताई ब ग़ायत शाने ज़ैबाई
अमीं बन कर अमानत आमिना की गोद में आई

1 : तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **फ़तावा रज़विय्या** मुख़र्रजा जिल्द 26 सफ़ह़ा 414 मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये।

दुन्या में तशरीफ़ लाते ही आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सज्दा किया । उस वक़्त होंटों पर येह दुआ जारी थी : **رَبِّ هَبْلِیْ اُمَّتِیْ** या'नी परवर्दगार ! मेरी उम्मत मुझे हिबा कर दे ।

رَبِّ هَبْلِیْ اُمَّتِیْ उम्मती कहते हुए पैदा हुए

ह़क़ ने फ़रमाया कि बख़्शा اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام

ग़ारे ह़िरा में इबादत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अहले अ़रब की भारी अक्सरिय्यत के ह़ालात आप सुन चुके । ऐसी वह़्शी क़ौम में रहते हुए भी हमारे मक्की मदनी आक़ा मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कभी किसी मजलिसे लह्वो लइ़ब (या'नी खेलकूद) में शरीक नहीं हुए और सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते सितूदा सिफ़ात हर क़िस्म की बुराई से दूर ही रही । सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अख़्लाक़े ह़मीदा से मुत्तसिफ़ और सिद्क़ो अमानत में इस क़दर मुतआ़रिफ़ हुए कि ख़ुद आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ौम आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ''सादिक़'' और ''अमीन'' के लक़ब से याद करती थी । सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **ग़ारे ह़िरा** में (जो मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا से मिना शरीफ़ को जाते हुए बाईं त़रफ़ को आता है) क़ियाम फ़रमाते और वहां कई कई रोज़ तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत में मश्ग़ूल रहते ।

इज़्हारे नुबुव्वत

शाहे मक्कतुल मुकर्रमा, सुल्त़ाने मदीनतुल मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उ़म्र शरीफ़ जब चालीस साल की हुई उस वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इज़्हारे नुबुव्वत की इजाज़त मिली। वरना सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो उस वक़्त भी नबी थे जब कि अभी ह़ज़रते सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तख़्लीक़ (या'नी पैदाइश) भी न हुई थी। चुनान्चे नबिय्ये मोह़तरम, **नूरे मुजस्सम, रसूले मुह़तशम,** शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में अ़र्ज़ की गई : **مَتٰى كُنْتَ نَبِيًّا** या'नी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कब से नबी हैं ? फ़रमाया : **وَاٰدَمُ بَيْنَ الرُّوْحِ وَالْجَسَد** या'नी (मैं तो उस वक़्त भी नबी था जब कि अभी) आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) रूह़ और जिस्म के दरमियान थे।

(اَلْمُسْتَدْرَك لِلْحاكِم ج۳ص۵۰۸ حديث۴۲۶۵ دار المعرفة بيروت)

आदम का पुतला न बना था, जब भी वोह दुन्या में नबी थे
है उन से आग़ाज़े रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم

पहली वह़्य

22 फ़रवरी 610 सि.ई. की वोह अ़ज़ीम साअ़त आई जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे **रसूल** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़स्बे मा'मूल **ग़ारे ह़िरा** को अपनी बरकतों से नवाज़ रहे थे। उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पहली बार येह आयाते मुक़द्दसा बत़ौरे वह़्य ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हुए :

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ ۚ﴿۱﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۚ﴿۲﴾ اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۙ﴿۳﴾ الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۙ﴿۴﴾ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ یَعْلَمْ ؕ﴿۵﴾ (پ۳۰،علق۱،۵)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : पढ़ो अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) के नाम से जिस ने पैदा किया आदमी को ख़ून की फटक से बनाया। पढ़ो और तुम्हारा रब (عَزَّوَجَلَّ) ही सब से बड़ा करीम है जिस ने क़लम से लिखना सिखाया। आदमी को सिखाया जो न जानता था।

फिर कुछ अ़र्से बा'द येह आयाते मुक़द्दसा नाज़िल हुईं **:**

یٰۤاَیُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۙ﴿۱﴾ قُمْ فَاَنْذِرْ ۪ۙ﴿۲﴾ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۪ۙ﴿۳﴾ وَثِیَابَكَ فَطَهِّرْ ۪ۙ﴿۴﴾ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۪ۙ﴿۵﴾ (پ۲۹،المدثر۱،۵)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ बालापोश ओढ़ने वाले ! खड़े हो जाओ फिर डर सुनाओ और अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) ही की बड़ाई बोलो और अपने कपड़े पाक रखो और बुतों से दूर रहो।

आग़ाज़े दा'वते इस्लाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अब इस हुक्म "قُمْ فَاَنْذِرْ" या'नी "खड़े हो जाओ फिर डर सुनाओ" से सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर लोगों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डराना और उन तक दा'वते इस्लाम पहुंचाना **फ़र्ज़** हो चुका था मगर हुनूज़ अ़लल ए'लान दा'वते इलल्लाह عَزَّوَجَلَّ (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बुलाने) का हुक्म न था। लिहाज़ा आमिना के लाल, महबूबे रब्बे जुल जलाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़िलहाल बा

ए'तिमाद लोगों में चुपके चुपके सिल्सिलए तब्लीग़ का आग़ाज़ फ़रमाया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नेकी की दा'वत पर कई मर्द व औ़रत ईमान ले आए। **मर्दों** में सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه, **लड़कों** में **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते मौलाए काएनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم, ख़वातीन में **उम्मुल मुअमिनीन ख़दीजतुल कुब्रा** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا, **आज़ाद शुदा ग़ुलामों** में ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه, **ग़ुलामों** में ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाले ह़ब्शी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ईमान ले आए।

मुसल्मान होते ही नेकी की दा'वत की धूम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने ईमान लाते ही नेकी की दा'वत की धूमें मचानी शुरूअ़ कर दी। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की **इन्फ़िरादी कोशिश** से पांच वोह ह़ज़रात मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए जिन का शुमार अ़शरए मुबश्शरह में होता है। इन के अस्माए गिरामी येह हैं : ﴿1﴾ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ﴿2﴾ ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ﴿3﴾ ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ﴿4﴾ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ﴿5﴾ ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه । ''अ़शरए मुबश्शरह'' उन दस सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को कहते हैं जिन को हमारे मक्की मदनी मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुन्या ही

में जन्नत की बिशारत इनायत फ़रमा दी थी। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

वोह दसों जिन को जन्नत का मुज़्दा मिला
उस मुबारक जमाअ़त पे लाखों सलाम

काश ! हम भी नेकी की दा'वत देने वाले बनें

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को **नेकी की दा'वत** का किस क़दर जज़्बा था कि दामने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में पनाह मिलते ही फ़ौरन दूसरों को भी सरकारे मोह़तरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दामने करम से वाबस्ता करने की धुन लग गई। उन्हें कितना ज़बर दस्त एह़सास था, कितनी क़द्र थी इस्लाम की, ऐ काश ! हमारे दिल में भी **नेकी की दा'वत** की अहम्मिय्यत जा गुज़ीं हो जाए। काश ! हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों के मज़्हर जन्नत की त़रफ़ अपने उन भोले भाले इस्लामी भाइयों को भी ले चलने की कोशिशें तेज़ तर कर दें जो गुनाहों की अंधेरी वादियों में भटक रहे हैं। ऐ काश ! हमें भी फ़िरंगी फ़ेशन की यलग़ार में घिरे हुए मुसल्मानों को **मदीने के ताजदार** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी सुन्नतों की त़रफ़ बुलाने का जज़्बा नसीब हो जाए। इस मदनी काम या'नी **नेकी की दा'वत** को आ़म करने का एक मुअस्सिर ज़रीआ़ **अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत** भी है। दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में हफ़्ते में एक दिन मख़्सूस कर के दुकानों, घरों वग़ैरा पर **नेकी की दा'वत** पेश की जाती

है। बा'ज़ इस्लामी भाई हफ़्ते में दो बार, तीन बार भी बल्कि रोज़ाना भी देते हैं और बा'ज़ आक़ा के दीवाने तो जब देखा तन्हा ही **नेकी की दा'वत** की धूमें मचाते रहते हैं! आइये तन्हा नेकी की दा'वत देने या'नी "**इन्फ़िरादी कोशिश**" करने के मुतअ़ल्लिक़ एक ईमान अफ़रोज़ मदनी बहार सुनते चलें चुनान्चे

एक हेरोइन्ची की आपबीती

एक इस्लामी भाई ने जो कुछ ह़ल्फ़िय्या (या'नी ब क़सम) बयान दिया उस का ख़ुलासा अ़र्ज़ करता हूं : तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **तीन[3] रोज़ा बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** का वाक़िआ़ है। हम चन्द दोस्त रस्मी तौ़र पर इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िर तो हो गए मगर बयानात की बरकात छोड़ कर रात इज्तिमाअ़ गाह के बाहर एक जगह बैठ कर ख़ूब सिगरेट के कश और गपशप लगाने में मश्ग़ूल हुए इसी में **जिन्न भूत के सन्सनी ख़ैज़ वाक़िआ़त** भी छिड़ गए, जिस की बिना पर कुछ डरावना सा माह़ोल बन गया। इतने में सब्ज़ इ़मामे वाले एक अधेड़ उ़म्र के इस्लामी भाई ने क़रीब आ कर हमें सलाम किया और फ़रमाने लगे : अगर इजाज़त हो तो कुछ अ़र्ज़ करूं! हम ने कहा : फ़रमाइये! उन्हों ने बड़े हमदर्दाना लहजे में कहा : आप ह़ज़रात के इज्तिमाअ़ में शिर्कत का अन्दाज़ देख कर मुझे अपनी पिछली ज़िन्दगी याद आ गई! मैं ने सोचा कि अपनी **आपबीती** गोश गुज़ार करूं कि शायद आप लोगों को इस में कुछ **इ़ब्रत के मदनी फूल** मिल जाएं। फिर उन्हों ने अपनी दास्ताने हिदायत निशान बयान

करनी शुरूअ़ की : पहले पहल मेरी सिगरेट नोशी की आ़दत पड़ी और फिर बुरे दोस्तों की सोह़बत की नुहूसत ने मुझे चरस और हेरोईन जैसे मोहलिक नशे का आ़दी बना दिया, आह ! **मैं सोलह साल तक नशे का आ़दी रहा।** येह बताते हुए उन की आवाज़ भर्रा गई, मगर बयान जारी रखते हुए कहा : मेरी बुरी आ़दतों से बेज़ार हो कर मुझे घर से निकाल दिया गया। मैं फ़ुटपाथ पर सोता और कचरे के ढेर से उठा कर या मांग कर खाता। आप को शायद यक़ीन न आए कि **मैं ने एक ही लिबास में सोलह साल गुज़ार दिये !** मेरी कैफ़िय्यत बिल्कुल एक पागल की त़रह़ हो चुकी थी !

एक मुक़द्दस रात का क़िस्सा है, ग़ालिबन वोह रमज़ानुल मुबारक की सत्ताईसवीं शब थी। मैं बद नसीब उसी गन्दी ह़ालत में बद मस्त एक गली के कोने में **कचरा कूंडी** के पास लैटा हुवा था कि **सलाम** की आवाज़ पर चौंका ! जब आंखें मलते हुए देखा तो मेरे सामने **सब्ज़ सब्ज़ इमामा सजाए दो इस्लामी भाई** खड़े मुस्कुरा रहे थे उन्हों ने बड़ी मह़ब्बत से मेरा नाम पूछा, शायद ज़िन्दगी में पहली बार किसी ने इतनी मह़ब्बत से मुझे मुख़ात़ब किया था। फिर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उन्हों ने शबे क़द्र की अ़ज़मत से मुतअ़ल्लिक़ बड़ी प्यारी प्यारी बातें बताईं। मैं उन के अपनाइय्यत वाले अन्दाज़ और हुस्ने अख़्लाक़ की बिना पर वैसे ही **मुतअस्सिर** हो चुका था, मज़ीद उन की शहद से भी मीठी मीठी मदनी गुफ़्तगू तासीर का तीर बन कर मेरे जिगर में पैवस्त हो गई, मैं उन के साथ मस्जिद की त़रफ़ चल पड़ा। मस्जिद के ग़ुस्ल ख़ाने में अपना मैला चिक्कट लिबास उतारा और ग़ुस्ल कर के साफ़ सुथ्रे कपड़े

पहन कर **16 साल बा'द जब पहली बार मस्जिद में दाख़िल हो कर नमाज़ के लिये मैं ने निय्यत बांधी तो अपने आंसू न रोक सका, रो रो कर मैं ने नशे और दीगर गुनाहों से तौबा कर ली और दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो गया।** اَلْحَمْدُ لِلّٰه घर वालों ने मुझे वापस ले लिया। मैं क़ादिरिय्या रज़विय्या सिल्सिले में दाख़िल हो कर हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم का मुरीद बन गया। मैं ने येह निय्यत कर ली कि अब हर क़ीमत पर नशे की आ़दत छुड़ाऊंगा। इस के लिये मुझे बड़ी आज़्माइशों से गुज़रना पड़ा, मैं तक्लीफ़ के बाइ़स चीख़ता, बुरी त़रह़ तड़पता, घर वाले मेरी येह ह़ालत देख कर रो पड़ते। बा'ज़ लोग मश्वरा देते कि हेरोइन का एक आध सिगरेट ही पी लो! मगर मैं ने ऐसा न किया कि इस त़रह़ तो मैं फिर इस नुहूसत में गिरिफ़्तार हो जाऊंगा बल्कि घर वालों से कहता कि ज़रूरतन मुझे चारपाई से बांध दिया करो। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आहिस्ता आहिस्ता बेहतरी आने लगी और मुझे नशे से मुकम्मल त़ौर पर नजात मिल गई और मैं आज **दा'वते इस्लामी** का एक अदना सा मुबल्लिग़ हूं। उन की **दास्ताने इ़ब्रत निशान** सुन कर हम सब अश्कबार हो गए, हम ने साबिक़ा गुनाहों से तौबा की और दा'वते इस्लामी के **मदनी माहोल** से वाबस्ता हो गए। मैं येह बयान देते वक़्त اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ एक डिवीज़न के **मदनी इन्आ़मात** के ज़िम्मेदार की ह़ैसिय्यत से **नेकी की दा'वत** की धूमें मचाने की कोशिश कर रहा हूं।

छोड़ें बद मस्तियां, और नशे बाज़ियां *जामे उल्फ़त पियें, क़ाफ़िले में चलो*
ऐ शराबी तू आ, आ जुवारी तू आ *सब सुधरने चलें, क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कुफ़्र के ऐवानों में खलबली

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तीन साल तक इशाअ़ते इस्लाम के लिये **ख़ुफ़्यतन** (या'नी छुप कर) **इन्फ़िरादी कोशिश** फ़रमाई। फिर जब हुक्मे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ से अ़लल ए'लान इस्लाम का पैग़ाम देना शुरूअ़ किया और बुत परस्ती की मज़म्मत बयान करने लगे तो **कुफ़्र के ऐवानों में खलबली पड़ गई।** सरदाराने क़ुरैश एक वफ़्द की सूरत में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा अबू त़ालिब के पास आए और अपनी शिकायत पेश की, कि आप के भतीजे साहिब हमारे मा'बूदों को बुरा भला कहने के साथ साथ हमारे आबाओ अज्दाद को गुमराह और हम लोगों को अह़मक़ ठहराते हैं, आप बराए मेहरबानी उन को समझा दीजिये कि वोह ऐसा न करें, अगर आप समझा नहीं सकते तो बीच में से हट जाइये हम ख़ुद उन्हें समझ लेंगे। अबू त़ालिब अगर्चे ईमान तो न लाए लेकिन अपने भतीजे या'नी सय्यिदुना मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बेह़द मह़ब्बत करते थे लिहाज़ा क़ुरैश के सरदारों को नरमी के साथ समझा बुझा कर रुख़्सत कर दिया।

सीधे हाथ में सूरज.....

दा'वते इस्लाम का सिल्सिला ज़ोरो शोर से जारी रहा, चुनान्चे कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के अन्दर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़िलाफ़ बुग़्ज़ो अ़दावत की आग मज़ीद भड़क उठी, वोह फिर वफ़्द बना कर अबू

त़ालिब के पास आए और धमकी आमेज़ लहजे में कहने लगे : "अबू त़ालिब ! हम ने तुम से कहा था कि अपने भतीजे को समझा दो मगर तुम ने उन को नहीं समझाया, हम अपने मा'बूदों और आबाओ अज्दाद की तौहीन बरदाश्त नहीं कर सकते, हम तुम्हारी इ़ज़्ज़त करते हैं, तुम उन को अब भी रोक दो, अगर नहीं रोकना चाहते तो तुम भी हमारे साथ मुक़ाबले के लिये तय्यार हो जाओ ताकि दोनों फ़रीक़ में से एक का फ़ैसला हो जाए।" वोह लोग येह धमकी दे कर चले गए। अबू त़ालिब ने सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बुला कर अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे प्यारे भतीजे ! क़ौम ने मुझे आप के बारे में येह येह शिकायात की हैं, मेहरबानी कर के बाज़ आ जाइये। अपने आप पर भी और मुझ पर भी रह़्म कीजिये।" येह सुन कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाबन इर्शाद फ़रमाया : **"ऐ मेरे चचा ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर वोह लोग मेरे सीधे हाथ में सूरज और उलटे हाथ में चांद भी ला कर रख दें, जब भी मैं इस काम को हरगिज़ हरगिज़ न छोड़ूंगा यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इसे (या'नी इस्लाम को) ग़ालिब कर दे या मैं इस काम में अपनी जान दे दूं।"** फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रो पड़े और वापस जाने लगे, तो अपने प्यारे भतीजे صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह अ़ज़्मो इस्तिक़्लाल देख कर अबू त़ालिब को जोश आ गया और बुला कर कहने लगे : "ऐ भतीजे صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ख़ूब दिल खोल कर अपने दीन की तब्लीग़ कीजिये, अहले क़ुरैश आप का बाल भी बीका न कर सकेंगे।"

(اَلسِّيْرَةُ النَّبَوِيَّة لِابن هَشَّام ص١٠٣، ١٠٤ دار الكتب العلمية بيروت)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया ! आमिना के लाल, मह़बूबे रब्बे जुल जलाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अ़ज़्मो इस्तिक़्लाल किस क़दर ज़बर दस्त था । दुन्या की कोई त़ाक़त आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दा'वते इस्लाम से न हटा सकती थी ।

वोह बिजली का कड़का था या सौते हादी
अ़रब की ज़मीं जिस ने सारी हिला दी

बदनाम करने की साज़िश

मन्क़ूल है कि अहले क़ुरैश ने एक इज्लास किया जिस में इस बात पर इज़्हारे तश्वीश किया गया कि अब **ह़ज** का मौसिमे बहार आ रहा है और लोग दुन्या के गोशे गोशे से यहां आएंगे, चूंकि सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **खुल्लम खुल्ला** नेकी की दा'वत दे रहे हैं लिहाज़ा लोग इन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सुनेंगे और सुनेंगे तो मानेंगे भी और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के गिरवीदा हो जाएंगे । लिहाज़ा इस की रोक थाम की एक ही सूरत है और वोह येह कि हम **शाहे ख़ैरुल अनाम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ूब बदनाम कर दें ताकि लोग आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से **मुतनफ़्फ़िर** हो जाएं और सिरे से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बात ही न सुनें और ज़ाहिर है जब बात ही न सुनेंगे तो माइल भी न होंगे । चुनान्चे इस मश्वरे के बा'द कुफ़्फ़ारे ना हन्जार ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को (مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ) मजनून, काहिन और जादूगर मश्हूर करना शुरूअ़ कर दिया । लेकिन क़ुरबान जाइये ! **मुबल्लिगे़ आ'ज़म, नबिय्ये मुकर्रम, रसूले मुह़तशम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बुलन्द हिम्मती पर कि आप

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन की वाहियात व ख़ुराफ़ात से ज़र्रा बराबर न घबराए मुसल्सल नेकी की दा'वत में मश्ग़ूल ही रहे।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़िलाफ़ बदनाम करने की बा क़ाइदा मुहिम चलाई गई फिर भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पाए सबात को ज़र्रा बराबर लग़्ज़िश न आई, मुसल्सल **नेकी की दा'वत** का काम जारी ही रखा। इस से हमें भी येह दर्स मिला कि ख़्वाह कोई इल्ज़ाम डाले, मज़ाक़ उड़ाए, बद अल्क़ाबी से पुकारे, हमारी आवाज़ की नक़्ल उतारे, कैसा ही सताए मगर हमें सुन्नतों भरा **मदनी माहौल** नहीं छोड़ना चाहिये, सुन्नतों पर अ़मल करते हुए दूसरों तक भी **नेकी की दा'वत** पहुंचाते रहना चाहिये। जो हिम्मत हारे बिग़ैर जानिबे मन्ज़िल रवां दवां रहता है बिल आख़िर मन्ज़िल पा ही लेता है।

तुम्हें ऐ मुबल्लिग़ येह मेरी दुआ है
किये जाओ तै तुम तरक़्क़ी का ज़ीना

दिल का मरीज़ ठीक हो गया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकी की दा'वत का जज़्बा बढ़ाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र करते रहिये। आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक "मदनी बहार" पेशे ख़िदमत है : एक इस्लामी भाई को दिल की तक्लीफ़ हुई, डॉक्टर ने बताया कि आप के दिल की दो नालियां बन्द हैं, एन्जियोग्राफ़ी **(ANGIOGRAPHY)** करवा

लीजिये। इलाज पर हज़ारहा रुपै का ख़र्च आता था, येह बेचारे ग़रीब घबराए हुए थे, एक इस्लामी भाई ने उन पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कर के वहां दुआ मांगने की तरग़ीब दिलाई, चुनान्चे वोह तीन दिन के लिये मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर बने, वापसी पर त़बीअ़त को बेहतर पाया। जब टेस्ट करवाए तो तमाम रिपोर्टें दुरुस्त थीं, डॉक्टर ने हैरत से पूछा कि तुम्हारे दिल की दोनों बन्द नालियां खुल चुकी हैं, आख़िर येह कैसे हुवा ? जवाब दिया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कर के दुआ करने की बरकत से मुझे दिल के मोहलिक मरज़ से नजात मिल गई है।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
दिल में गर दर्द हो डर से रुख़ ज़र्द हो पाओगे राह़तें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आह ! सद आह ! हमारे दिलों के ताजदार, दो आ़लम के सरदार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्लाम के परचार की ख़ात़िर कैसे कैसे मज़ालिम सहे, जौरो जफ़ा की तेज़ व तुन्द आंधियों में भी कभी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी जगह से न हिले, कुफ़्फ़ारे बदकार के ज़ुल्मो सितम की एक दास्तान पढ़िये और तड़पिये :

कुफ़्फ़ार के नरग़े में.....

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : कुफ़्फ़ारे ना हन्जार ने एक बार दो जहां के ताजदार, नबियों के सरदार, **महबूबे परवर्द गार**

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को घेर लिया वोह सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को घसीटते और धक्के मारते और कहते जाते थे कि तुम ही वोह शख़्स हो जो सिर्फ़ एक मा'बूद की इबादत का हुक्म देते हो। **हज़रते मौला अ़ली** كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم (जो कि उन दिनों काफ़ी कम उ़म्र थे) फ़रमाते हैं कि इतने में **हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه मर्दाना वार आगे बढ़े और कुफ़्फ़ार को मारते, पीटते, गिराते, हटाते सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तक जा पहुंचे और सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उन ज़ालिमों के नरग़े से निकाल लिया। उस वक़्त सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की मुबारक ज़बान पर पारह 24 **सूरतुल मुअ्मिन** की आयत नम्बर 28 जारी थी :

اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ

(**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या एक मर्द को इस पर मारे डालते हो कि वोह कहता है कि मेरा रब **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) है और बेशक वोह रोशन निशानियां तुम्हारे पास तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से लाए।) अब कुफ़्फ़ारे बद किरदार ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को पकड़ लिया। उन के सरे अक़्दस और दाढ़ी मुबारक के बहुत से बाल नोच डाले और मार मार कर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को शदीद ज़ख़्मी कर दिया।

(شَرْحُ الزَّرْقَانِی عَلَى الْمَوَاهِبِ اللَّدُنِّيَّة ج ۱ ص ٤٦٨-٤٧٠)

बहर ह़ाल कुफ़्फ़ारे जफ़ाकार ने बड़ा ज़ोर लगाया, ख़ूब धम्कियां दीं कि किसी त़रह़ भी सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस्लाम के परचार से बाज़ आ जाएं मगर हमारे प्यारे और मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दीने इस्लाम का काम करते ही रहे। जूं जूं काम

बढ़ता रहा तूं तूं कुफ़्फ़ारे बद अत्वार के ग़ैज़ो ग़ज़ब में भी इज़ाफ़ा होता रहा। वोह हर साअ़त माहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अज़िय्यत पहुंचाने की ताक में रहते थे।

चादर का फन्दा

कुफ़्फ़ारे नाबकार एक बार का'बए पुर अन्वार के साए में बैठे हुए थे और सरकारे आ़लम मदार, दो जहां के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (मक़ामे इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के क़रीब) मश्ग़ूले नमाज़ थे। उ़क़्बा बिन अबी मुईत़ नामी काफ़िर ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की गरदन मुबारक में चादर का फन्दा डाल कर सख़्ती के साथ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक गला घूंटना शुरूअ़ किया। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दौड़े आए और उसे (या'नी उ़क़्बा बिन अबी मुईत़ को) पीछे हटाया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुबारक ज़बान पर पारह 24 **सूरतुल मुअ्मिन** की आयत नम्बर 28 जारी थी :

اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ یَّقُوْلَ رَبِّیَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَیِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْؕ

(**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या एक मर्द को इस पर मारे डालते हो कि वोह कहता है कि मेरा रब **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) है और बेशक वोह रोशन निशानियां तुम्हारे पास तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से लाए।)

(صَحِیحُ الْبُخاری ج۳ص۱۶ ۳حدیث ۴۸۱۵ دارالکتب العلمیة بیروت)

एक रोज़ दो जहां के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने काशानए अत़्हर से बाहर तशरीफ़ लाए आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को रास्ते में जो भी काफ़िर मिलता ख़्वाह गुलाम होता या आज़ाद वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तक्लीफ़ देता। (اَلسِّیرَۃُ النَّبَوِیَّۃ لِابن ھَشّام ص۱۱۳)

आह ! इमामुल आ़बिदीन, सुल्त़ानुस्साजिदीन,

सय्यिदुस्सालिहीन, सय्यिदुल मुरसलीन, ख़ातमुन्नबिय्यीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दास्ताने ग़म निशान पर दिल ख़ून रोता है। इस क़दर मज़ालिम सहने के बा वुजूद भी वल्वलए तब्लीग़े इस्लाम और नमाज़ों का एहतिमाम **अल्लाह** ! **अल्लाह** !

ह़रम की सरज़मीं पर आप पढ़ते थे नमाज़ अक्सर
हमेशा उस घड़ी की ताक में रहते थे बद गोहर
कोई आक़ा की गरदन घूंटता था कस के चादर में
कोई बद बख़्त पथ्थर मारता था आप के सर में

ऊंटनी का बच्चादान

एक दिन हुज़ूर सरापा नूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का'बए मुअ़ज़्ज़मा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के क़रीब नमाज़ पढ़ रहे थे और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश एक जगह बैठे हुए थे। उन में से एक ने कहा कि तुम इन को देख रहे हो ? फिर बोला : तुम में कौन ऐसा है जो फ़ुलां क़बीले से ज़ब्ह़ कर्दा ऊंटनी का बच्चादान उठा लाए और जब येह **सज्दे** में जाएं तो इन के कन्धों पर रख दे ? इस पर बद बख़्त उ़क़्बा बिन अबी मुईत़ उठ कर चल दिया और बच्चादान (या'नी वोह खाल जिस में ऊंटनी का बच्चा लिपटा हुवा होता है) ला कर **रह़मते आ़लमिय्यान** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दोनों मुबारक शानों के दरमियान रख दी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इसी ह़ाल में रहे और सरे मुबारक सज्दे से न उठाया और वोह सब के सब क़ह़क़हे मार कर हंसते रहे, यहां तक कि **ख़ातूने जन्नत** सय्यिदह फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا (जिन की उ़म्र उस वक़्त ब मुश्किल आठ साल थी) आईं और उन्हों ने ह़बीबे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पुश्ते अत़्हर से उस गन्दगी को उठा कर फेंका। तब **सरकारे नामदार**

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना सरे अक़्दस उठाया और अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ के दरबार में अ़र्ज़ गुज़ार हुए। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन कुरैशियों को पकड़ । या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू अबू जह्ल बिन हश्शाम, उ़त्बा बिन रबीआ़, शैबा बिन रबीआ़, वलीद बिन उ़त्बा, उमय्या बिन ख़लफ़ और उ़क़्बा बिन अबी मुईत़ को पकड़ । इस ह़दीसे पाक के रावी ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने इन को बद्र के रोज़ मक़्तूल (या'नी क़त्ल शुदा) देखा। वोह बद्र के कूंएं में औंधे मुंह गिरे हुए थे। (صَحِیحُ الْبُخاری ج۱ص۱۰۲حدیث۲٤۰)

न उठ सकेगा क़ियामत तलक ख़ुदा की क़सम
कि जिस को तुम ने नज़र से गिरा के छोड़ दिया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, **शहन्शाहे नुबुव्वत**, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे **जन्नत** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा। (مِشْکاةُ الْمَصابِیح، ج۱ص۵۵حدیث۱۷۵دارالکتب العلمیة بیروت)

सुन्नतें आ़म करें दीन का हम काम करें
नेक हो जाएं मुसल्मान मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"या नबिय्यल्लाह" के 9 हुरूफ़ की निस्बत से नाख़ुन काटने के 9 मदनी फूल

﴾1﴿ जुमुआ़ के दिन नाख़ुन काटना **मुस्तह़ब** है। हां अगर ज़ियादा बढ़

गए हों तो जुमुआ़ का इन्तिज़ार न कीजिये (دُرِّمُختار ج۹ص۶۶۸) **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** मौलाना अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं **:** मन्कूल है **:** जो **जुमुआ़** के रोज़ नाख़ुन तरश्वाए (काटे) **अल्लाह** तआ़ला उस को दूसरे जुमुआ़ तक बलाओं से महफ़ूज़ रखेगा और तीन दिन ज़ाइद या'नी दस दिन तक। एक रिवायत में येह भी है कि जो जुमुआ़ के दिन नाख़ुन तरश्वाए (काटे) तो **रह़मत आएगी और गुनाह जाएंगे** (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتَار ج۹ص۶۶۸, बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा **:** 16, स. 225,226) ﴿2﴾ हाथों के नाख़ुन काटने के मन्कूल त़रीक़े का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है **:** पहले सीधे हाथ की शहादत की उंगली से शुरूअ़ कर के तरतीब वार छुंग्लिया (या'नी छोटी उंगली) समेत नाख़ुन काटे जाएं मगर अंगूठा छोड़ दीजिये। अब उलटे हाथ की छुंग्लिया (या'नी छोटी उंगली) से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाख़ुन काट लीजिये। अब आख़िर में सीधे हाथ के अंगूठे का नाख़ुन काटा जाए। (دُرِّمُختار ج۹ص۶۷۰، اِحیاءُ الْعُلُوم ج۱ص۱۹۳) ﴿3﴾ पाउं के नाख़ुन काटने की कोई तरतीब मन्कूल नहीं, बेहतर येह है कि सीधे पाउं की छुंग्लियां (या'नी छोटी उंगली) से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाख़ुन काट लीजिये फिर उलटे पाउं के अंगूठे से शुरूअ़ कर के छुंग्लियां समेत नाख़ुन काट लीजिये। (اَیضًا) ﴿4﴾ जनाबत की ह़ालत (या'नी ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने की सूरत) में नाख़ुन काटना मक्रूह है। (عالَمگیری ج۵ص۳۵۸) ﴿5﴾ दांत से नाख़ुन काटना मक्रूह है और इस से बरस या'नी **कोढ़** के मरज़ का अन्देशा है। (اَیضًا) ﴿6﴾नाख़ुन काटने के बा'द उन को दफ़्न कर दीजिये और अगर इन को फेंक दें तो भी ह़रज नहीं। (اَیضًا) ﴿7﴾ नाख़ुन का तराशा (या'नी कटे हुए नाख़ुन) **बैतुल ख़ला** या ग़ुस्ल ख़ाने में डाल देना मक्रूह है कि इस से **बीमारी** पैदा होती है। (اَیضًا)

﴾8﴿ बुध के दिन नाखुन नहीं काटने चाहियें कि बरस या'नी कोढ़ हो जाने का अन्देशा है अलबत्ता अगर उन्तालीस (39) दिन से नहीं काटे थे, आज बुध को चालीसवां दिन है अगर आज नहीं काटता तो चालीस दिन से ज़ाइद हो जाएंगे तो इस पर वाजिब होगा कि आज ही के दिन काटे इस लिये कि चालीस दिन से ज़ाइद नाखुन रखना ना जाइज़ व मक्रूहे तह़रीमी है। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़तावा रज़विय्या मुखर्रजा जिल्द 22 सफ़हा 574, 685 मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये) ﴾9﴿ लम्बे नाखुन शैतान की निशस्त गाह हैं या'नी इन पर शैतान बैठता है। (اِتحافُ السّادَةِ لِلزّبیدی ج۲ص۶۵۳)

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ दो कुतुब "बहारे शरीअ़त" हि़स्सा 16 (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो　　लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो　　पाओगे बरकतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यत सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

الحمد لله رب العلمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين اما بعد فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم

सुन्नत की बहारें

الحمد لله عزوجل तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके मदनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमे'रात इ़शा की नमाज़ के बा'द आप के शह्र में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **मदनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, ان شاء الله عزوجل इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। ان شاء الله عزوجل''** अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करना है। ان شاء الله عزوجل

M.R.P. ₹00/-

01011603

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372

Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200

421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi

011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025*T&C Apply

feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net